P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अब्बासीकाल में बग़दाद की प्रमुख इमारतें और उनकी विशेषताऐं

गुलाम मोइन उद्दीन
विभागाध्यक्ष,
अरबी विभाग अरब कल्चर,
इस्लामिया डिग्री कालेज,
लालबाग़, लखनऊ

सारांश

अब्बासी काल मे बग़दाद की भवन निर्माण कला तथा आन्तरिक साज–सज्जा पर पूर्णरूपेण इरानी कला का पूर्ण प्रभाव था इसके निर्माण में लगभग एक लाख कारीगरों व विशेषज्ञों ने भाग लिया यह संसार का नहीं बल्कि मुसलमानो का पहला गोलाकार नगर था इसका मानचित्र इस प्रकार तैयार किया गया कि सर्वप्रथम भूमि पर जलते हुए अंगारे गोलाकार के रूप मे रख दिये गये खलीफ़ा अबुजाफ़र (अल–मंसूर) ने अपने हाथों से इसकी आधारशिला रखी एक महत्वपूर्ण निर्माण कुब्बतुस्सखरा भी था इसकी ऊँचाई 80 गज़ थी ।

मुख्य शब्द : निर्माण, कारीगर, विशेषज्ञों, गोलाकार नगर, चहारदीवारी

प्रस्तावना

सीरिया में उमवी शासन की समाप्ति के पश्चात् जब शासन बनी अब्बास के हाथ में आया तो अबुल अब्बास अल–सफ्फाह ने इराक़ मे अम्बार नामक स्थान पर अपनी प्रथम राजधानी सन् 751 ई0 में स्थापित की और उसका नया नाम अल–हाशिमिया रखा (तारीख़े याकूबी भाग 2 पृष्ट 429) यहां पर अबुल अब्बास ने अपने सैनिक अधिकारियों के लिए आवश्यकतानुसार सैनिक बारकें इत्यादि बनवाई लेकिन यह राजधानी अधिक समय तक स्थापित न रह सकी और फिर कुछ समय पश्चात् मंसूर द्वारा बग़दाद का निर्माण कराया गया।

बग़दाद का निर्माण सन् 762 ई0 में दूसरे अब्बासी ख़लीफ़ा अबुजाफ़र अल मंसूर ने बड़ी छानबीन के बाद कराया था जैसा कि आर0ए0 निकलसन ने लिखा है:–

"After carefully examining various sites, the caliph Mansoor fixed on a little Persian village on the west bank of the tigris, called Baghdad, which being interpreted, means given by God".

इसके निर्माण में सीरिया, मोसल, ईरान व ईराक़ के अनुभवी इंजीनियरों, शिल्पकारों, चित्रकारों, कारीगरों तथा दूसरे सम्बन्धित अन्य विशेषज्ञों ने भाग लिया। अरब इतिहासकार याकूबी का मानना है कि इसके निर्माण में लगभग एक लाख कारीगरों व विशेषज्ञों ने भाग लिया और यह कि यह संसार का सबसे गोलाकार नगर था (तारीख़े याकूबी पृष्ट 238–240) किन्तु शाह मोइनुद्दीन अहमद नदवी का मत है कि यह संसार का नहीं बल्कि मुसलमानो का पहला गोलाकार नगर था (तारीख़े इस्लाम भाग 4 पृष्ट 426) इस गोलाकार नगर का मानचित्र इस प्रकार तैयार किया गया कि सर्वप्रथम भूमि पर जलते हुए अंगारे गोलाकार के रूप मे रख दिये गये उसकी राख से जो चिन्ह बने उन पर नगर की दोहरी चहारदीवारी की नींव खोदी गयी नगर की पहली चहारदीवारी के बाद गहरी खन्दक फिर उसके बाद दूसरी चहारदीवारी निर्मित की गई इसके पश्चात् मध्य क्षेत्र मे एक अन्य तीसरी चहारदीवरी भी थी इसके सम्बन्ध मे प्रो0 हिट्टी ने इस प्रकार उल्लेख किया है:–

"It was circular in form, whence the name Round city (al-madauvvarah), with double brick walls, a deep moat and a third innermost wall rising ninety feet and surrounding the central areas".

इसके निर्माण के समय खलीफ़ा मंसूर ने उस समय के सर्वक्षेष्ठ विद्वानों इमाम अबू हनीफ़ा, हज्जाज बिन अरतात, खालिद बरमकी, इब्राहीम फ़ज़ारी व अली बिन ईसा को आमंत्रित किया (मोजमूल बुलदान याकूत हमवी पृष्ट 233) उनकी उपस्थिति में खलीफ़ा अबुजाफ़र (अल–मंसूर) ने अपने हाथों से इसकी आधारशिला रखी इस जगह की समस्त भूमि को किसानों से महंगे दामों पर खरीद लिया गया और इसके निर्माण की देखभाल की जिम्मेदारी इमाम अबुहनीफ़ा पर डाली गयी जिनके मातहत बहुत से विशेषज्ञ थे।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गोलाकार बाहरी चहारदीवारी के चारों दिशाओं में समानान्तर दूरी पर चार लोहे के विशाल प्रवेश द्वार भी निर्मित किये गये। इस सम्बन्ध मे इतिहासकार सैयद अमीर अली का कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैः–

"Mansur planned the city of a circular shape, surrounded by a strong walls and deep moat, pierced by four gates, with massive iron doors, each gate was surrounded by a gift cupola and was a sufficient height to allow the passage to a horse man holding a laft his lance ".

बाहरी चहारदीवारी धूप में पकाई गई ईंटों और उसकी नींव पत्थरों से निर्मित की गई थी अन्दरूनी चहारदीवारी बाहरी चहारदीवारी से अधिक ऊँची थी इसकी ऊँचाई 90 फीट इसकी नीव की मोटाई 105 फीट थी जो ऊपर पहुँच कर मात्र साढ़े सैंतिस फीट रह गई थी। बाहरी चहारदीवारी के चारो विशाल प्रवेश द्वारों की बनावट अलग–अलग थी बाबे–खुरासान जो सीरिया (शाम) से लाया गया था इसके सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि यह फ़राअना काल की दस्तकारी का नमूना था– बाबे कूफ़ा को कूफ़े में रहने वाले एक कारीगर खालिद बिन अब्दुल्लाह ने निर्मित किया था। बाबे शाम जो सबसे कम मज़बूत था मंसूर के आदेश से बगदाद में ही तैयार किया गया था ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह ज्ञात न हो सका कि बाबे –बसरा कहां निर्मित हुआ था।(अरबों का तमद्दुन पृष्ट 91) हर वह व्यक्ति जो बग़दाद (मदीनतुल–मंसूर) में आता खन्दक को जो बाहरी चहारदीवारी को (अन्दर से) घेरे हुए थी, उसके ऊपर से गुज़रने के बाद चारों प्रवेश द्वारों मे से किसी एक से मुख्य नगर मे पहुँच पाता था जहां से एक सीधी सड़क नगर के मध्य तक जाती थी इसके सम्बन्ध में इतिहासकार इब्ने असीर ने लिखा है कि नगर के चारों दिशाओं में चार मार्ग मंसूर के शाही महल तक जाते थे जो चालीस हाथ (गज़) चौड़े थे (तारीख़े इब्ने असीर पृष्ट 222 भाग 5) कुछ समय बाद जनसंख्या की अधिकता के कारण इन मार्गों को दस हाथ (गज़) और चौड़ा किया गया मंसूर का शाही महल (क़स्रुज़्ज़हब) मानचित्र के अनुसार नगर के मध्य स्थित था यह नगर की सबसे ऊँची इमारत थी इसमे प्रवेश के लिये एक बहुमूल्य दरवाज़ा था जिस पर सोने का पत्तर चढ़ा था इसको बाबुज़्ज़हब अर्थात् सोने का दरवाज़ा कहते थे। इसके सम्बन्ध में सैयद अमीर अली ने लिखा हैः–

"Inside, and at some distance from the centre of the city, came the inner walls, within which arose majestically the imperial palace of khuld with its golden gate (Bab-uz-zahab).

Not far from the residence of the caliph, and within the enclosure, stood the cathedral Mosque, the mansions of the princes and nobles, the arsenal, the treasury and other government officers".

इन इमारतों में एक महत्वपूर्ण निर्माण कुब्बतुस्सखरा भी था इसकी ऊँचाई 80 गज़ थी यह नगर का सबसे ऊँचा गुम्बद था जो नगर के हर भाग से देखा जा सकता था (कुतुब बग़दादी भाग 1 पृष्ट 73) बरमकी वजीरों के महल की भवन निर्माण कला की दृष्टि से अत्यन्त आकर्षक थे इन्होंने अपने रहने के लिये भवनों की जो श्रृंखला बनवाई उसका नाम उन्होने शमसिया रखा।

खलीफ़ा मंसूर ने भी बग़दाद से बाहर अपने मनोरंजन के लिए एक शानदार भवन "क़स्रुल खुल्द" के नाम से निर्मित कराया जिसके चारों ओर शानदार बाग़–बगीचे और नहरें थीं। बग़दाद की भवन निर्माण कला पर ईरानी प्रभाव का वर्णन करते हुए प्रो0 पी0के0 हिट्टी ने लिखा हैः–

"Since early antiquity the Persians have proved themselves masters of decorative design and colour, through their efforts the industrial arts of Islam attained a high degree of excellence. Carpet weaving, as old as Pharaonic Egypt, was especially developed.

Hunting and garden scences were favoured in rug designs, and alum was used in the due to render the many colours fast".

उद्देश्य

इस पेपर का उददेश्य पाठको को यह बताना है कि अब्बासीकाल में भी बग़दाद में कुछ ऐंसी इमारतो का निर्माण कराया गया जो भवन निर्माण कला तथा आन्तरिक साज–सज्जा की दृष्टि से आज भी अद्भुद है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि अब्बासी काल मे बग़दाद और उसके आसपास निर्मित भवनों की भवन निर्माण कला तथा आन्तरिक साज–सज्जा पर पूर्णरूपेण इरानी कला का पूर्ण प्रभाव था इसके साथ –साथ बग़दाद के प्रवेश द्वार मुख्य रूप से सीरिया (शाम) और कूफ़ा इत्यादि स्थानों से निर्मित करके मंगवाये गये थे। जो उस समय की विशिष्ट कलाओं का सम्मिश्रण थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अहमद बिन अबि याकूब,तारीखे याकूबी, लन्दन, 1954*
2. *ख़तीब बगदादी, तारीखे ख़तीब, लन्दन, 1952*
3. *इब्ने असीर, अलकामिल फिल तारीख, लन्दन, 1930*
4. *मोहम्मद अब्दुल्लाह, मुख़्तसर तारीखुल इस्लामी मसूरी, 1936*
5. *(अनुवादक) मोहम्मद इब्राहीम, मरूजुज़ ज़ाहब मसऊदी, हैदराबाद, 1913*
6. *शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी, तारीखुल इस्लाम मुकम्मल 4, आज़मगढ़, 1980–1985*
7. *(अनुवादक) सैय्यद मुबारजुद्दीन रफअत, इस्लामी फने तामीर,कुतुब जामा, दिल्ली, 1952*
8. *शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी, इस्लाम और अरबी तमददुन,दारूल मसननफीन, आज़मगढ, 1982*
9. *बरनालर्ड लेविस, अरबस इन हिस्ट्री, 1951*
10. *पी. के हिट्टी, हिस्ट्री ऑफ द अरबस, 1953*
11. *रिज़वी सईदी अली शब्बर, डेवेलेप्मेन्ट ऑफ फाइन आर्ट्स अन्डर द अब्बासिड्स, लन्दनए 1945*